दैनिक नवज्योति
dainiknavajyoti.in
रविवार, 22 मार्च, 2020

रविवारीय



इसे कोरोना नजरबंदी कहें या आपातकाल, फिलहाल बचने का यही दिखाई दे रहा है तरीका



कोरोना की स्टेज 3 से बचना है तो तुरंत किया जाए

लॉकडाउन

भारत में कोरोना वायरस अभी स्टेज 2 पर है और इसे इसी स्टेज पर नियंत्रित करना आवश्यक

कवर स्टोरी
प्रस्तुतिः नौशाबा परवीन

स्टेज 3 को रोकने के लिए है बहुत कम समय

अभी 20 दिन पहले इटली ने कोरोनावायरस के 1700 केस और 34 मौतें रिपोर्ट की थीं। अब इटली में 25,000 से भी अधिक मामले हैं और 1800 से ज्यादा मौतें हो चुकी हैं। यह आशंका बढ़ती जा रही है कि अमेरिका इटली बन सकता है। अमेरिका ने कोरोना वायरस से 65 से अधिक मौतें रिपोर्ट की हैं। अगर अमेरिका जैसा विकसित देश इटली बनने के कगार पर है तो कल्पना कीजिए कि अगर भारत में कोरोना वायरस स्टेज 3 में पहुंच जाता है तो क्या होगा। हमारे ग्रामीण क्षेत्रों में तो स्वास्थ्य की बुनियादी सुविधाएं भी नहीं हैं। कोरोना वायरस से लड़ने की तो बहुत दूर की बात है। शहरों में भी सामान्य स्वास्थ्य समस्याओं के लिए पर्याप्त वेंटीलेटर नहीं हैं। कोरोना वायरस की आपातस्थिति में क्या दशा होगी इसका अंदाजा स्वतः ही लगाया जा सकता है। इसलिए तमाम सावधानियां बरतते हुए कोरोनावायरस को स्टेज 2 पर ही नियंत्रित करना आवश्यक हो जाता है, भले ही इसके लिए कितने ही कठोर कदम क्यों न उठाने पड़ें। ध्यान रहे कि आईसीएमआर के डायरेक्टर जनरल ने कहा है कि स्टेज 3 को रोकने के लिए हमारे पास सिर्फ 30 दिन या उससे कम समय हैं। हमें अपनी ग्रामीण जनता को जागृत करना बहुत जरूरी है कि वह हाथ धोएं और हर समय हाइजीन बनाये रखें। हाथ मिलाना बंद करें और आंख, नाक व मुंह को स्पर्श न करें। भारत की 66 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। व्यक्तिगत लापरवाही व इंफाइट्रक्चर के अभाव के कारण हेल्थकेयर सेवाओं तक उसकी पहुंच सीमित है।

कोरोना स्टेज का मतलब और आगे

भारत वर्तमान में कोरोना वायरस की दूसरे स्टेज में है। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च के महानिदेशक बलराम भार्गव के अनुसार तीसरा चरण कम्युनिटी ट्रांसमीशन है और यह स्थिति नहीं आनी चाहिए। यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम कितनी तत्परता से अपनी अंतरराष्ट्रीय सीमा को बंद करते हैं। लेकिन हम यह नहीं कह सकते हैं कि कम्युनिटी ट्रांसमीशन नहीं होगा।

स्टेज 1	इस स्थिति में संक्रमण के मामले वायरस से प्रभावित देशों के संक्रमित लोगों से आते हैं।
स्टेज 2	जब संक्रमित लोगों से बीमारी का फैलाव स्थानीय लोगों, रिश्तेदारों या परिचितों के संपर्क में आकर वे भी सक्रमित हो जाते हैं। इस स्थिति में वायरस का सोर्स पता होता है और उसे आसानी से ट्रेस किया जा सकता है।
स्टेज 3	यहां मौजूद संक्रमित लोगों से जब यह वायरस कम्युनिटी ट्रांसमिशन में पहुंच जाता है तो बहुत बड़ा क्षेत्र इससे प्रभावित होता है। इटली और स्पेन अभी इसी चरण में हैं।
स्टेज 4	यह सबसे भयावह स्थिति है, जब बीमारी महामारी को रूप ले लेती है और यह स्पष्ट नहीं होता है कि इसका खात्मा कब होगा। चीन में ऐसा ही हुआ है।

भारतीयों का सामाजिक दूरी बनाकर आगामी 15 दिन के लिए अपने अपने घरों में कैद होना ही होगा



भारत में कोविड-19 के अभी सिर्फ 180 (19 मार्च तक) मामले ही प्रकाश में आए हैं, जिनमें से 25 विदेशी हैं, चार व्यक्तियों की मौत हो चुकी है और 15 का उपचार हो चुकाहै। लेकिन एहतियात के तौर पर सरकार ने 31 मार्च तक सभी जिम, मॉल व थिएटर आदि बंद कर दिए हैं। यूरोपीय संघ, तुर्की व इंग्लैंड से भारतीयों के लौटने पर भी पाबंदी लगा दी गयी है। इस बात पर भी विचार है कि हर मोहल्ले में जांच के लिए मोबाइल मेडिकल वैन भेजी जाए। ये सावधानियां अत्याधिक आवश्यक प्रतीत होती हैं। ऐसा अकारण नहीं है। दरअसल भारत में कोरोना-वायरस अभी स्टेज 2 पर है और इसे इसी स्टेज पर नियंत्रित करना आवश्यक है। अगर यह स्टेज 3 पर पहुंच जाता है तो इसे नियंत्रित करना लगभग असंभव हो जाएगा। क्योंकि अगर यह फैल गया तो विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों से मौत की जो खबरें आएंगी, उनकी गिनती करना कठिन हो जाएगा। इस आशंका को मद्देनजर रखते हुए अनेक विशेषज्ञों ने यह राय दी है कि सभी भारतीय सोशल डिस्टेंसिंग यानि सामाजिक दूरी का पालन करते हुए आगामी 15 दिन के लिए अपने अपने घरों में कैद हो जाएं। यह काम बहुत मुश्किल है खासकर इसलिए कि अपने देश में ऐसे लोगों की तादाद अधिक है जिनका चूल्हा रोजाना मजदूरी करने से ही चलता है। उनके पास दो सप्ताह का राशन स्टोर करने की सुविधा नहीं है। लेकिन फिलहाल बचत का खाना यही दिखायी दे रहा है कि अपने अपने घरों में कैद हो लिया जाए। गौरतलब है कि इटली जैसे विकसित देश में कोरोना वायरस स्टेज 3 में पहुंच गया है और उसे नियंत्रित करना कठिन हो रहा है, क्योंकि उसके पास पर्याप्त वेंटिलेटर नहीं हैं।

..तो बोतल से बाहर निकल आएगा जिन्न

अभी सक्रिय मामलों में हम सौ का आंकड़ा पार कर चुके हैं। शायद मामले इससे अधिक हों क्योंकि हमारे यहां टेस्टिंग बहुत धीमी गति से हो रही है, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि स्पेन ने 7 मार्च को 124 केस रिपोर्ट किए जो 13 मार्च को बढ़कर 2086 हो गए। संदेश स्पष्ट है लॉकडाउन नहीं किया तो जिन्न बोतल से बाहर निकल आएगा। यह सही है कि शैक्षिक संस्थाओं व सिनेमा हॉल बंद किए जा रहे हैं।





लॉकडाउन के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं

इसके अतिरिक्त ग्रामीण भारत में हैंड हाइजीन यानि हाथ धोना से संबंधित नाना अध्ययनों में बताया गया है कि बच्चे को फीड कराने से पहले सिर्फ 26.3 प्रतिशत लोग हाथ धोते हैं। स्तनपान कराने से पहले 14.7 प्रतिशत बालक का मल-मूत्र साफ करने के बाद 16.7 प्रतिशत और बच्चे का निचला हिस्सा साफ करने के बाद 18.4 प्रतिशत लोग हाथ साफ करते हैं। इस डाटा से मालूम होता है कि व्यवहार में परिवर्तन लाना कितनी बड़ी चुनौती है। इस समय ग्लोबल स्थिति यह है कि दुनिया के 135 देशों में 1,53,517 व्यक्ति कोरोनावायरस से संक्रमित हैं। उससे भारत के लिए सबक यह है कि वह जल्द लॉकडाउन करे। क्योंकि जिन देशों ने मसलन चीन, इटली, स्पेन व फ्रांस ने समय रहते यानी जब पुष्ट केसों की संख्या बहुत कम थी, लॉकडाउन नहीं किया, वहां कोरोना वायरस के मामले एक सप्ताह में ही चंद सौ से कई हजार तक पहुंच गए। अब ये देश स्टेज 3 से जूझ रहे हैं। फरवरी 23 को कोरोना वायरस के चीन से बाहर 386 केस थे, जो मार्च 7 को 4000 हो गए और 13 मार्च को 16000 हो गए थे। मार्च 1 को चीन के बाहर सक्रिय केस 18 प्रतिशत थे जो अगले दो सप्ताह में 84 प्रतिशत हो गए जबकि इस अवधि में चीन में सिर्फ 16 नए मामले प्रकाश में आए। यह इसलिए हुआ कि चीन ने हुबेई प्रांत में लॉकडाउन किया। भारत भी स्टेज 3 से लॉकडाउन करके ही बच सकता है। यह दर्द भरा होगा, लेकिन अपने देश में जो लचर हेल्थकेयर व जनसंख्या का दबाव है, उसके कारण लॉकडाउन के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है।



विनम्र चेतावनी

प्लीज रेफ्रेन फ्रॉम हैंड शेकिंग

संजय श्रीवास्तव

हैंडशेक को टाटा कहने और भारतीय अभिवादन शैली का अनुगमन आरम्भ कर देने का टाइम

कोरोना के कारण रातोंरात लोग एक दूसरे से हाथ मिलाने में कतराने लगे हैं। क्या यही वह समय है, जब दुनिया हैंडशेक से हाथ जोड़ ले और ठेठ भारतीय अभिवादन शैली का अनुगमन आरम्भ कर दे? कोई और करे न करे, हमें तो शुरू कर ही देना चाहिए। ....तो क्या हम हैंडशेक को बाय बाय करने जा रहे हैं। कोरोना के इस प्रकोप से पहले ही बिल गेट्स ने हैंडशेक छोड़ दिया था। उन्हें हाथ मिलाना पसंद नहीं। वे अपने साथ हमेशा हैंड सैनिटाइजर लिए चलते हैं। आज उनकी हाथ न मिलाने की आदत सराही जा रही है। संसार को आखिर अब समझ में आ ही गया कि हमारी सभ्यता कितनी दूरंदेशी थी। लंदन की एक मल्टीनेशनल कंपनी के स्वागत कक्ष में एक बड़े बोर्ड पर लाल घेरे में दो समानांतर लाइनों से क्रास के निशान के साथ लिखा है प्लीज रेफ्रेन फ्रॉम हैंड शेकिंग। लगता है कि कोरोना हैंडशेक को टाटा बाय बाय करवा कर रहेगा। अब लोग हाथ मिलाना छोड़ हाथ जोड़ना शुरू कर देंगे? क्या यह संस्कृति और संस्कार संसार सहर्ष स्वीकार कर लेगा। अपनी परंपरा को तज पश्चिमी जगत भी अभिवादन का यही तरीका अपना इसे वैश्विक बनाएगा।







समझाएं हैंडशेक से फैलते हैं जीवाणु-विषाणु

मगर आवश्यकता इस बात की है कि इस बात के आंकड़े और वैज्ञानिक विवरण देकर लोगों को समझाया जाए कि हैंडशेक से वास्तव में जीवाणु, विषाणु भारी मात्रा में फैलते हैं। अगर ऐसी अवधारणा की पुष्टि नहीं होती तो यह दौर गुजर जाने के बाद लोग हाथ मिलाना नहीं छोड़ेंगे। बहुतों का मानना है कि हाथ जोड़ना सर्वोत्तम है, लेकिन अगर लोग अपना हाथ हमेशा साफ रखें, श्वसन के तौर तरीके का पूरा ख्याल रखें तो हाथ मिलाने में कोई बुराई नहीं है। भारत जैसे तमाम देशों में हैंड हायजीन वैसे भी बहुत बेहतर नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानक के अनुरूप हाथ धोना बहुतों को नहीं आता है। उनकी इस खामी को उनका अपना माइक्रोबोयाम यानी उनका जीवाणु पर्यावरण तो संभाल लेता है लेकिन दूसरे का भी यह संभाल ले यह जरूरी तो नहीं। तो हाथ मिलाने में दूसरों को नुकसान तो है लेकिन यह तभी जब किसी एक या दोनों का हाथ साफ न हो। आज संसार के 100 से अधिक देशों में हैंडशेक को हतोत्साहित करने को कहा गया है। दुनिया की तमाम हस्तियां अब भारतीय तरीके से प्रणाम करने लगी हैं।

हाथ मिलाना नहीं, जोड़ना

हाथ मिलाने की जगह हाथ जोड़ने की परिपाटी के लिए अभियान 2008-09 और 2014 में भी चल चुका है। तब बहुतेरे देशों सहित अमेरिका और कनाडा में लोगों ने हाथ न मिलाने की बात पर खूब कड़ाई से पालन किया। लेकिन तब के आंकड़े बताते हैं कि संक्रमण के प्रसार में वहां कोई उल्लेखनीय कमी नहीं आयी। इसीलिए संकट बीतने के बाद लोग फिर हाथ जोड़ना छोड़कर हैंडशेक पर लौट आए। जब सार्स फैला था तो लाख कोशिशों के बावजूद महज 10 फीसद ब्रिटेनवासियों ने कुछ दिनों के लिए हाथ मिलाना छोड़ा था और अमेरिका, अर्जेंटीना, मैक्सिको को मिलाकर ऐसे लोग केवल 24 फीसदी थे जिन्होंने मरीजों या संदिग्ध संक्रमित व्यक्ति से जिस तरह की शारीरिक दूरी बनाई थी हाथ मिलाना उन सभी में से एक था। हाथ मिलाने से संक्रमण वाकई फैलता है इस बात का उत्तर अभी तक कोई शोध नहीं दे पाया है।

PG2 कहानी



माँ के जाते ही

एक दिन मैंने उसे कहा-अब तुम अपने बारे में सोचा करो,थोड़ा लाइफ स्टाइल अच्छा करो। खुश रहना सीखो,देखो ये सब करने से आत्मविश्वास बढ़ता है और दफ्तर में काम करने के लिए यह सब बहुत जरूरी है।

PG3 लेटेस्ट अपडेट



मैं खेल का आनंद लेता हूं

2012 में जडेजा आईपीएल (इंडियन प्रीमियर लीग) के सबसे महंगे खिलाड़ी (2 मिलियन डॉलर) थे, यह भी उनके लिए बहुत बड़ी बात थी। क्यों? वह बताते हैं,उस बोली के बाद मेरी आर्थिक स्थिरता वास्तव में बेहतर हो गई।

दैनिक नवज्योति
dainiknavajyoti.in
रविवार, 22 मार्च, 2020

कविता

उमेश अपराधी

नारी



नारी तुम मधुर मधुरिमा हो
यह कहने की बात नहीं
हंसकर जिसको तुम भर न सको
ऐसा कोई आधात नहीं।
नर से लेकर नारायण तक
जिसकी आवश्यकता पड़ती हो
तुम नारी वही शक्ति हो।
नर को नारायण करती हो
अपने झरने में सींच,
पुरुष को तुम ही पूज्य बनाती हो
इसलिए सृष्टि का मूल्य तत्व
वेदों में तुम कहलाती हो।
इस युग के तप अग्नि में
तुम ही बादल बन सकती हो
गीले आंचल की छांह तले
तुम नई सृष्टि रच सकती हो।

आजकल नेहा के फोन कुछ ज्यादा ही आने लगे थे। जब फोन करती तो पहले से कुछ ज्यादा परेशान नज़र आती।एक तो दफ्तर में कुछ ठीक नहीं चल रहा था ऊपर से सास का परलोक गमन। जब बात करती अक्सर उसकी रुलाई फूट पड़ती। मैं भी सोच में पड़ जाती कि आज के जमाने में भला कौन ऐसी बहू होगी जो सास के दुःख में आँसू बहा दे और वह भी नौकरी वाली कमाऊ बहू।

कुहासी माँ के जाते ही

रोचिका अरुण शर्मा



एक दिन मैंने उसे कहा-अब तुम अपने बारे में सोचा करो,थोड़ा लाइफ स्टाइल अच्छा करो। खुश रहना सीखो,देखो ये सब करने से आत्मविश्वास बढ़ता है और दफ्तर में काम करने के लिए यह सब बहुत जरूरी है।

तुम ठीक कहती हो,जब से सास गयी कुछ ठीक सा नहीं लग रहा है उनके रहते तो मुझे कोई चिंता ही नहीं थी। न जाने कैसे उन्होंने इस घर को संभाल रखा था।

अब क्या हुआ,मैंने पूछा?

कहने को तो बात छोटी सी है पर मुझे कुछ ठीक नहीं लग रहा।

सास के जाते ही ससुर का व्यवहार कुछ बदल सा गया।

तुम्हें मेरे पति की स्थिति तो मालूम ही है,कुछ काम,धंधा तो करते नहीं।जब से विवाह हुआ मैंने तो उन्हें ऐसे ही देखा। शुरू.शुरू में तो बार.बार नौकरी बदलते थे फिर कुछ बरसों बाद यह भी बंद किया और घर ही बैठे रहते।कहते हैं न- खाली दिमाग शैतान का घर। कितनी बार झगड़ा करते,कभी बहुत अच्छे हो जाते हैं। हालांकि मुझे कुछ खास परेशान नहीं करते थे किन्तु इन दिनों घर में लड़ाई-झगड़ा करने लगे।कई बार मुझ से रुपये भी माँगते, फालतू का खर्च करते।तब मैं ने देना बंद किया तो अनाप.शनाप बोलना भी शुरू हो गए।

कभी-कभार अपनी माँ से झगड़ा करते तो मैं बीच-बचाव करती और अपनी सास का साथ देती।सास ने भी सदा मेरा ही साथ दिया।उन्होंने मुझे कभी कुछ बुरा तो कहा ही नहीं और न ही कोई रोक-टोक की।

लेकिन जब मेरे पति ने एक बार घर के झगड़े में अपने माता.पिता पर हाथ उठा लिया तो मैं ने भी उन्हें खूब नाराजगी दिखाई।तब से मेरे पति मुझ से नाराज रहने लगे और घर के ही ऊपर के हिस्से में बने कमरों में से एक कमरे में अपना बेडरूम बना लिया।

तब से मैं अपने ससुराल वाले के साथ नीचे के बेडरूम में और वे ऊपर के कमरे में। मेरी सास यह सब देख कर बहुत दुखी होतीं, मुझे कहतीं तू भी इस के साथ ऊपर रहा कर।लेकिन मुझे यह उचित नहीं लगा,एक ही घर में रह कर दो परिवार कैसे कर दूं?

मैं तो पूरे दिन नौकरी पर चली जाती किन्तु सास शायद इस दुःख को बर्दाश्त नहीं कर पाई और एक दिन हार्ट अटैक से चल बसीं।

बारह दिनों में मैंने जब घर की साफ़ सफाई की तो रसोई के डिब्बों,गद्दे के नीचे जगह जगह माँ के छुपाये रुपये मिले।

क्या तुम्हारी सास रुपये छुपा कर रखा करती थी? मैंने चौंक में ही बात काटते हुए कहा?

हाँ मेरे ससुर से छुपा छुपा कर रखती थी शायद।मेरे पति को जेब.खर्च दिया करती थीं। बेचारी खुद ने तो कुछ सुख भोगा नहीं और बेटे के अलग होने के सदमे को झेल न पायीं शायद?

अब क्या हुआ नया?मैं जानने को उत्सुक थी।

अब जैसे ही बारह दिन के बाद मैं ने दफ्तर जाना शुरू किया मेरी ननद जो कि पास में ही रहती हैं अक्सर मेरे ससुर से मिलने आ जाती हैं। एक दिन मालूम हुआ कि ये आयीं थीं और सास की साड़ियाँ ले गयीं।मुझे बोलीं कि मैं ने सोचा भाभी आप तो सलवार सूट पहनती हैं आपके काम नहीं आयेंगी इसीलिए मैं ले गयी।

मैंने सोचा हो सकता है माँ की निशानी है सो ले गयीं,इसलिए बुरा भी नहीं माना। किन्तु उसके बाद हर दिन घर में कुछ नई बातें होने लगती हैं।

कैसी बातें?

जैसे घर का सारा सोना तुलवा कर देख लेते हैं कितने तोला है?

किस ने कही यह बात?

मेरे नंदोई ने।

पर तुम्हारे नंदोई को क्या हक है ये सब करने का?

वही तो,आप तो जानती हैं मेरे बच्चे भी नहीं हुए।मेरे ससुर की जो भी प्रॉपर्टी है हमारे बाद वह तो ननद और उनके बच्चों की ही है।

तुम्हारी बात तो सही है पर इसमें ननद और नंदोई को अभी से ही हक नहीं जताना चाहिए।

मेरे पति के व्यवहार के बारे में डॉक्टर को बताया तो बोले शायद ये डिप्रेशन में हैं।उनका चेकअप करके दवाइयां देनी होंगी।

तो डॉक्टर को क्यूँ नहीं दिखाती उन्हें?

मैं ने कई बार उनसे कहा तो ये कहते हैं उन्हें नहीं जाना डॉक्टर के पास।

ओहो !यह तो बड़ी समस्या है? तुम अपने ससुर जी को क्यूँ नहीं कहतीं कि वे तुम्हारे पति को डॉक्टर के पास लेकर जाएँ।आखिर उनका भी तो बेटा है यार।

आपकी बात सही है मैंने कहा भी पर बाप-बेटा के बीच तो युद्ध छिड़ा हुआ है।दोनों एक दूसरे के सामने झुकने को तैयार नहीं। मेरे पति कहते हैं कि उन्हें अपने पिता से कोई मतलब नहीं,इन्होंने किसी स्त्री की कभी इज्जत नहीं की। मेरी माँ को कभी सुकून,चैन से नहीं रहने दिया।

ससुर से मदद मांगतीं हूँ तो कहते हैं तुम जानो क्या करना है, इसका डॉक्टर के पास जाओ। बात करो फिर एक गाड़ी आती है जो आकर इसे ले जायेगी। शायद वे मेंटल हॉस्पिटल की बात करते हैं।

क्या कह रही हो तुम? कोई बाप भला अपने बेटे के लिए ऐसा कैसे कह सकता है?

यही तो,मैंने कहा। पापा आप भी चलिए डॉक्टर के पास। हम दोनों मिल कर डॉक्टर से बात करते हैं और इनका इलाज करवाते हैं। तो ससुर का कहना है मैं क्यूँ जाऊं?मैं तो अपना घरबार बेच कर छोटा घर ले लूंगा,अलग रह लूंगा। फिर तुम दोनों जानो तुम्हें क्या करना है। वैसे इसे इन्टेरिक शॉक्स की जरूरत है। एकबार पहले भी लग चुके हैं।

मैं सचमुच उनकी बात सुनकर हैरान हो गयी।

अजीब स्थिति है तुम्हारे परिवार की,सच में बहुत ही बड़ी मुसीबत आ गयी तुम्हारे ऊपर।

इसीलिये चिंतित हूँ,कल रात को भी नींद नहीं आयी।

तुम अपने नन्द नंदोई से क्यूँ नहीं कहतीं कि तुम्हारे पति के इलाज में तुम्हारी मदद करें?

वे तो जब आती हैं,बस सास के गहनों के बारे में पूछती रहती हैं।

पर गहने हैं किसके पास,मैंने पूछा?

घर का आधा सोना मेरे पास है।आधा मेरे ससुर के पास।

हम्म ! इसीलिये खलबली मची है उन सब के मन में।

शायद ! पर मुझे कुछ नहीं चाहिए। मैं बस अपने पति का इलाज करवाना चाहती हूँ।उसके लिए अपने ससुर एवं नन्द से मदद भी चाहती हूँ।

जब तक सास थीं तब तक भी तो मैंने कभी घर के खेने पर नज़र भी न डाली,तो अब भी क्या फर्क पड़ता है।

पर तुम हिम्मत रखो और इस बारे में अपने ससुर एवं नन्द से खुल कर बात करो।

अगले दिन जब उसका फोन आया मैं ने पूछ लिया,अब क्या नया।

बहुत कुछ, कहाँ से शुरू करूं? कल फिर से नन्द आयी थीं तभी ससुर भी आ गए और बोले घर में गहने रखना उचित नहीं। मैं अपने नाम एक लॉकर खुलवा कर बैंक में रख देता हूँ।

उनकी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि मुझ से रहा न गया और गुस्से में आ कर मैं मुंह से मन के उद्गार निकल ही गए-अब मैं कहती हूँ मेरे पति का इलाज करवाना है तो आप सब को सांप सूंघ जाता है और नन्द बाई आप का भी तो भाई है वह। आज तो आप भाई दूज करने आयी हैं,भाई की कोई खबर ले नहीं ली और आप को माँ के गहनों की इतनी चिंता?

माँ ने जीते जी मुझे इस घर में कोई तकलीफ नहीं होने दी। अपने बेटे के लिए सब से सुपा कर पैसे जमा करती रही। अपना रात-दिन एक कर पूरे परिवार की पाला उन्होंने। पर उफ्फ भी नहीं की। परिवार को बाँध कर रखा। बेटा जैसा भी है उसे घर में रखर से रखा। और माँ के जाते ही....कह कर वह फूट.फूट कर रोने लगीं और मैं उसका मर्म समझ गयी।

दीवान ए-ग़ालिब

जो मय-ओ-नग्मा को अंदोहरुबा कहते हैं

प्रेम और युद्ध के बारे में दुनिया भर में अनेक रूमानी पक्तव्य दिए जाते रहे हैं। पिछली सदी के शुरुआती वर्षों में ही इनका खंडन भी किया गया। अंग्रेज विचारक और साहित्यकार जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने इस रूमानियत का खूब विरोध किया था। प्रेम के बारे में उनका विचार था कि यह आर्थिक सुरक्षा प्राप्त करने के लिए किया जाता है। और जंग के बारे में उन्होंने कहा था, अगर तुम्हें लड़ना ही है, तो लड़ो, युद्ध को गौरवान्वित क्यों करते हो? गालिब ने यूरोप में एंटी रोमांटिक काल की शुरुआत के पूर्व ही एंटीरोमांटिस्मि की पैरवी की थी। उन्होंने कहा था,

अगले वक्तों के हैं ये लोग, इन्हें कुछ न कहो
जो मय-ओ-नग्मा को अंदोहरुबा कहते हैं।

अर्थात ये लोग पुराने जमाने के हैं, उनसे कुछ कहना बेकार है, जो लोग शराब और कविता को दुःख दूर करने वाला बताते हैं।

आज मिर्जा गालिब की जो गजल पेश है, उसमें भी प्रेम के बारे में प्रचलित रूमानियत का खंडन किया गया है।

गजल

दहर में नक्शे-वफा वजाहे-तसल्ली न हुआ
दहर में नक्शे-वफा वजाहे-तसल्ली न हुआ
है ये वो लफ्ज कि शर्मिन्दा-ए-मानी न हुआ।
सब्ज-ए-खत से तेरा काकुले-सरकश न दबा
ये जुमूर्द भी हरीफे-दमे-अफई न हुआ।
मैंने चाहा था कि अन्दोहे-वफा से छूटूं
वो सितमगर मेरे मरने पे भी राजी न हुआ।
किससे महरूमिए-किस्मत की शिकायत कीजे
हमने चाहा था कि मर जाएं, सो वो भी न हुआ।
हूं तेरे वादा न करने में भी राजी कि कभी
गोश्ते मिन्नत-कशे गुलबाँग-तसल्ली न हुआ।

हिन्दी अनुवाद

संसार में प्रेम शांति और सांत्वना का कारण नहीं होता।
यह शब्द कभी सार्थक नहीं हुआ।
तुम्हारी जुल्फों की नागिन कभी दंवाए नहीं दबी।
नीलम भी इस नागिन की सांस छीनने में विफल रहा।
मैंने सोचा था कि मर जाने पर अत्याचार की पीड़ा से मुक्ति मिलेगी,
लेकिन वह अत्याचारी मेरे मरने पर भी राजी न हुआ।
भाग्यहीनता की शिकायत किससे करूं, हम तो इस हाल में मर जाना चाहते थे, लेकिन यह भी सम्भव नहीं हुआ।
तुमने कभी मुझसे कोई वादा नहीं किया। मैं इससे भी राजी था।
क्योंकि मौत कभी मीठी सांत्वनाओं का कृतज्ञ नहीं होती।

प्रस्तुति: प्रभात गौतम

बच्चों के लिए पर्यावरण की सीख

बाल साहित्य के लिए केन्द्रीय साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त गोविन्द शर्मा की पुस्तक पेड़ और बादल में पर्यावरण को लेकर बालकथाओं की रचना की गई है। इसमें दस कहानियां शामिल की गई हैं। पुस्तक की पहली कहानी ही है-पेड़ और बादल। वारिश की कमी क्यों हो रही है,इस विषय को इस कहानी का प्रमुख विन्दु रखा गया है। छोटी लड़की गुड़िया के माध्यम से बादल की परेशानी जिस प्रकार से पाठकों के सामने रखी गई है उससे पूरी बात यह समझ में आती है कि अगर हमारी धरती पर पेड़ नहीं होंगे तो बरसात कैसे होगी। इस कहानी को पढ़कर बच्चों में वृक्षों के प्रति एक प्रकार की प्रेम पनपेगा,यह तय है। पेड़ और बादल,के लेखक की एक बात खास गौर करने वाली है कि वह कहानी का ताना-बाना बुनते समय बच्चों की आयु और सोच को आज के समय के आधार पर देखते हैं,न कि पहले से लिखी जा रही कहानियों की तर्ज पर। ऐसे भी बच्चों की कोई भी रचना तब तक श्रेष्ठ नहीं होती जब तक लेखक बच्चों की दुनिया में ही खुद को नहीं ले जाता। यह बात दीगर है कि उसकी उम्र भले ही बच्चों से कितनी भी अधिक क्यों न हो।

पुस्तक समीक्षा

मनोज वार्ष्णेय



पुस्तक का नाम- पेड़ और बादल
लेखक- गोविन्द शर्मा
प्रकाशक- सिलप्पागार, जयपुर
मूल्य-200

पुस्तक में सृजनात्मकता और पर्यावरणीय परिस्थितियों को ध्यान में रखना तथा वक्त की समस्याएं क्या हैं उन पर भी ध्यान देना गोविन्द की विशेषता है। इस संग्रह की कहानी-'जल कंजूस मैं वह लिखते हैं-ओवरफ्लो से या किसी और नल से बेकार बहते पानी को तुरंत रोक देना चाहिए। हां,पक्षियों को पानी पीते या उसमें नहाते देखना अच्छा खेल है। इसके लिए अपनी छत पर किसी बड़े बर्तन में पानी भरकर रख दो। पेड़ और डाली पर पानी का बर्तन लटका दो। अब अगर इस कहानी के इन थोड़े से अंशों को ही देख लें तो एकदम साफ नजर आता है कि लेखक ने कितनी बारीकि से बात की है। इसी तरह की बाते और दूसरी कहानियों में भी हैं।

जल चोर,पेड़ और पत्थर तथा अमृता देवी ने बचाए वृक्ष इस संग्रह की बेहतरीन कहानियों में शुमार हैं। दरअसल बच्चे किसी भी बात को तब जल्दी समझते हैं जब वे उसे अपने से जुड़ा पाते हैं। इस किताब की यही प्रमुखता बच्चों को अपने पास खींचती है। बच्चों के द्वारा बच्चों की बातें कहलवाना और फिर उसे चित्र के माध्यम से समझाना पेड़ और बादल की साझी विरासत है। मानव मूल्यों की यह कहानियां बच्चों के साथ ही बड़ों को भी ललचाती हैं और बोधगम्य भाषा से इसे भविष्य की ताकत बनाती हैं।

पुस्तक समीक्षा

सहज अन्तर्मन की कविताएं

सूर्यप्रकाश जीनगर का पहला कविता संग्रह रेत से हेत, पढ़कर मुझे लगा कि ये एक जीवन्त कवि हैं और इसमें सम्भावना और रचनात्मक सोच का संसार छिपा हुआ है। अपनी धरती का ये कवि समय,समाज और भविष्य के भरपूर सपनों की भाषा बोलता है।

रेत से हेत (कविता संग्रह) में कोई 70 कविताएं हैं और वरिष्ठ कवि विजेन्द्र की भूमिका भी ये प्रभाषित करती है, सूर्य प्रकाश जीनगर की कविताओं में प्रकृति,प्रेम,संघर्ष, उम्मीदें और सपनों का इन्द्रधनुष बहुत कुछ कहता है। इनकी कविताओं में जहां सहजता है वहां संवेदनशीलता भी है। ये अध्यक्षष होकर भी कविता में उपदेशक नहीं हैं,अपितु सवाल पूछने वाले जिज्ञासु हैं। सूर्यप्रकाश जीनगर की कविताओं में व्यवस्था विरोध का स्वर जितना मुखर है,उतना ही एक ईमानदार दुनिया की तलाश का जुनून है। इनकी कविताएं अपने पाठों से चलती हैं और घर-परिवार एवं आस-पड़ौस की आत्मीयता से ऊर्जा ग्रहण करती हैं। इनकी कविताओं में स्वप्नेरित सहजता भी है और आरोपित वैचारिकता जैसा कुछ नहीं है। मुझे इनकी कविताओं में सबसे अच्छी बात ये लगी कि, ये सहज मनुष्य अनर्वदृष्टि से प्रेरित हैं। सूर्यप्रकाश जीनगर में सरोकार और संघर्ष का सुंदर मेल-मिलाप है और कविता के सच की अवधारणा भी है। ये कविता संग्रह संस्कृति का एक गुलदस्ता है जिसमें रेत में बसे लोक जीवन की सोंधी चाव का दर्शाया गया है। संग्रह की कविता अर्थ में कुछ इस तरह हमें भरोसा दिलाता है, 'जैसे सत्य ही जीवन है और जीवन ही सत्य है।



- वेद व्यास
पुस्तक: रेत से हेत
कवि: सूर्यप्रकाश जीनगर
प्रकाशक: अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद
मूल्य: 275/-

तंज

डा. संजीव कुमार वर्मा

मैं हाथ नहीं मिलाता

'सनातनी सभ्यता' में एक दूसरे से मिलते या बिछड़ते समय शिष्टाचार स्वरुप हाथ जोड़कर अभिवादन करने की व्यवस्था दी गई थी जो पूर्णतः वैज्ञानिक व्यवस्था थी और इसको बाकायदा एक नाम दिया गया था 'नमस्कार मुद्रा' ।'नमस्कार' शब्द 'नमः' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'अभिवादन करना'।



यस,मैं 'हाथ' नहीं मिलाता। नहीं मिलाता तो नहीं मिलाता। बस, नहीं मिलाता। किसी से भी नहीं मिलाता। न सीनियर से, न जूनियर से। न दोस्तों से न रिश्तेदारों से बल्कि मेरी तरफ हाथ बढ़ाने वालों को मैं असभ्य समझता हूँ और हिकारत की नजरों से देखता हूँ।

आई डू नोट लाइक इट। वस्तुतः हाथ मिलाने से मुझे हद दर्जे की चिढ़ है मगर इसका मतलब यह कदापि नहीं कि मैं छूआछूत की बीमारी से ग्रस्त हूँ।

'सनातनी सभ्यता' में एक दूसरे से मिलते या बिछड़ते समय शिष्टाचार स्वरुप हाथ जोड़कर अभिवादन करने की व्यवस्था दी गई थी जो पूर्णतः वैज्ञानिक व्यवस्था थी और इसको बाकायदा एक नाम दिया गया था 'नमस्कार मुद्रा' ।'नमस्कार' शब्द 'नमः' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'अभिवादन करना'।

'नमस्कार मुद्रा' वह मुद्रा है जिसमें हम सामने वाले के शरीर के किसी हिस्से को छुए बिना उसका अभिवादन करते हैं। हाथ की सभी उंगलियाँ चिपकी हुई, दोनों हथेली एक दूसरे से चिपकी हुई, दोनों अंगूठे हृदय गुहा से सटे हुए, दोनों कुहनियां जमीन के समानांतर।

वैसे तो 'नमस्कार मुद्रा' के बहुत से आध्यात्मिक पहलू बताए गए हैं मगर वह सब आम इंसान की समझ से परे हैं। आम इंसान के लिए इतना ही काफी है कि उसे समझ में आ जाए कि हाथ मिलकर अभिवादन करने की सनक के कारण वह अनजाने में ही बहुत से घातक बैक्टीरिया का आदान प्रदान कर डालते हैं। नोरोवायरस व साल्मोनेल्ला जो डायरिया और पेचिंग का कारण बनता है,हाथ मिलाने से ही फैलते हैं।

इसके अलावा हाथ मिलाने से राइनोवायरस के संक्रमण का खतरा रहता है जिसकी वजह से जुकाम हो सकता है।

मैं नहीं चाहता कि मुझे डायरिया और डीसेंट्री हो। मैं नहीं चाहता कि मुझे टाइफाइड बुखार हो। मैं नहीं चाहता कि मुझे ह्यूमेन पैपिलोमा वायरस का इन्फेक्शन हो। मैं नहीं चाहता कि मुझे जेनाईटल हर्पीज हो। मैं नहीं चाहता कि मुझे हेपेटाइटिस 'ए' हो। स्वाभाविक है मुझे टाइफाइड बुखार हो। मैं नहीं चाहता कि मुझे मैनिंजाईटिस हो। मैं नहीं चाहता कि मुझे ह्यूमेन पैपिलोमा वायरस का इन्फेक्शन हो। मैं नहीं चाहता कि मुझे जेनाईटल हर्पीज हो। मैं नहीं चाहता कि मुझे हेपेटाइटिस 'ए' हो। स्वाभाविक है मुझे इन्फ्लूएंजा और 'चिकन पाक्स' वायरस भी हाथ मिलाने से ही फैलते हैं और जो सबसे वदमाश किस्म के बैक्टीरिया होते हैं जैसे 'स्टेफायलोकोक्कस' और 'क्लोस्ट्रीडियम', यह भी आपकी इस गर्मजोशी की वजह से ही फैलते हैं। और हाँ दफ्तरों में 'कंजक्टिवाइटिस' भी इसी की वजह से फैलता है। और स्टेरेटर कोरोना वायरस भी...इसलिए खुद का भला चाहते हो तो जाग जाओ।

आपका राशिफल आपके सितारे

आचार्य विनोद शास्त्री वशिष्ठ

22 से 28 मार्च 2020

मेष
ARIES

राशि विशेष : शुभ अंक 1,रंग नीला

कार्य योजना में अच्छा लाभ मिलेगा। इस सप्ताह युवाओं को मनचाहा काम मिलने का आसार है। नौकरी में चल रही परेशानी दूर होगी। अटका हुआ धन इस सप्ताह मिलने के योग है। स्वास्थ्य सही रहेगा। आप इस सप्ताह नया काम शुरू करना चाहेंगे। कार्यस्थल पर माहौल में सुधार होगा।

वृष
TAURUS

राशि विशेष : शुभ अंक 4,रंग लाल

अधिकारी आपके कार्य पर आश्चर्य करेंगे। इस सप्ताह कैरियर के लिये बेहतर प्रस्ताव मिलेंगे। व्यापार में साझेदारी लाभदायक रहेगी। कला एवं खानपान से जुड़े लोग को बड़ी सफलता मिल सकती है। इस सप्ताह अपनों का साथ खुशी देगा।

मिथुन
GEMINI

राशि विशेष : शुभ अंक 6,रंग बादामी

इस सप्ताह आर्थिक लाभ मिलने का असार है। बुजुर्गों के स्वास्थ्य की चिंता ज्यादा रहेगी।इस सप्ताह जिस कार्य में हाथ डालेंगे, सफलता मिल सकेगी। अधिकारी आपके कार्य का पूरा समर्थन करेंगे ।इस सप्ताह आप अपनी कार्यकुशलता से सभी को प्रभावित कर सकेंगे ।

कर्क
CANCER

राशि विशेष : शुभ अंक 8,रंग एलेटी

लक्ष्य प्राप्ति के लिए संघर्ष करना पड़ेगा।इस सप्ताह व्यापारिक लेन-देन में दूसरों पर ज्यादा भरोसा करना नुकसानदेह हो सकता है।आर्थिक मामलों को गंभीरता से सुलझाए ।प्रॉपर्टी संबंधी विवाद होने की आशंका है।अनुभवी लोगों के साथ से तरक्की मिल सकती है।

सिंह
LEO

राशि विशेष : शुभ अंक 7,रंग गुलाबी

आप अटका हुआ धन वसूलने में सफल रहेंगे।इस सप्ताह केयर में आ रही बाधा दूर होगी।पुराने सौदों का नवीनीकरण हो सकता है।इस सप्ताह आकस्मिक खर्चों के चलते हुए जरूरी काम को रोकना पड़ सकता है। खुद साथ बुजुर्गों के स्वास्थ्य की भी ज्यादा चिंता रहेगी ।

कन्या
VIRGO

राशि विशेष : शुभ अंक 6,रंग नारंगी

इस सप्ताह सामाजिक समारोह में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेंगे । कार्य स्थल पर तुरंत फैसला लेना लाभदाई रहेगा। सपने साकार करने के लिए अवसर की तलाश रहेगी।इस सप्ताह नये संपर्क सूत्र बढ़ेंगे ।व्यापार में नई प्रयोग सफलता दिला सकते हैं।

तुला
LIBRA

राशि विशेष : शुभ अंक 3,रंग काला

इस सप्ताह सामाजिक कार्यों से जुड़कर आप सुकून महसूस करेंगे ।अदालती मामले आपके पक्ष में हल हो सकते हैं।इस सप्ताह कारोबार में विस्तार की संभावना संभावना बन रही है ।

मैं खेल का आनंद लेता हूं

गुजरात के छोटे से शहर जामनगर से आने वाले रविन्द्र जडेजा के लिए इस प्रकार का एक्सपोजर मिलना बहुत बड़ी बात है। ऐसा कुछ वह क्रिकेट के कारण ही कर सके हैं, जिसके लिए वह क्रिकेट के बहुत शुक्रगुजार हैं।

-सारिम अन्ना

2012 में जडेजा आईपीएल (इंडियन प्रीमियर लीग) के सबसे महंगे खिलाड़ी (2 मिलियन डॉलर) थे, तो यह भी उनके लिए बहुत बड़ी बात थी। क्यों? वह बताते हैं,उस बोली के बाद मेरी आर्थिक स्थिरता वास्तव में बेहतर हो गई। जिस दिन मुझे यह खबर मिली तो मेरी जेब में सिर्फ दस रुपए थे! इससे पहले मुझे मेरे बेस प्राइस पर ही खरीदा जाता था। उस सत्र के बाद मैं अपने परिवार की जिम्मेदारियां उठाने में सक्षम हो गया और सारे मेडिकल खर्च भी वहन करने में।

जडेजा भौतिकतावादी नहीं हैं। उनका मानना है कि अगर वह अच्छे इंसान हैं, अच्छा काम करते हैं और जरूरत पड़ने पर लोगों की मदद करते हैं तो वह अपने आप से अधिक खुश होंगे। भौतिकतावादी होना, उनके अनुसार,हमेशा कायम नहीं रहता है। आपका लालच आपको आखिरकार बर्बाद कर देगा। लेकिन अच्छा इंसान होना आपके जीवन को सकारात्मक दिशा देने में बहुत काम आता है।इसके बावजूद जडेजा को चमड़े से बनी चीजें बहुत पसंद हैं जैसे बैग्स, शूज आदि। वह जब भी ट्रेवल करते हैं तो इन चीजों की अच्छी दुकानें तलाश करने का प्रयास करते हैं और आमतौर से चमड़े के जूते खरीदते हैं।

लेटेस्ट अपडेट



दरअसल, यह जडेजा की मां का सपना था कि उनका बेटा देश के लिए खेले। इस सपने ने जडेजा को जुनून के साथ कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित किया। दुर्भाग्य से उनकी माता का एक दुर्घटना में निधन हो गया और वह उस समय नहीं थीं, जब उनके बेटे ने देश का प्रतिनिधित्व करना शुरू किया। लेकिन अपनी मां की वजह से जडेजा का क्रिकेट के प्रति जुनून बढ़ा। उनके जुनून में कोई अंतर नहीं आया है, वह उनके बचपन में जैसे थे, आज भी वैसे ही हैं। वह आज भी पहले की तरह ही प्रैक्टिस करते हैं। लेकिन काश मेरी मां यह देख पातीं कि मैंने कितनी तरक्की की है- एक खिलाड़ी के रूप में भी और आर्थिक रूप से भी।

पहले जडेजा को सोशल मीडिया बहुत अधिक प्रभावित करता था। जब वह टीम में नये थे तो उन्हें मालूम नहीं था कि क्या प्रतिक्रिया करें। यह बहुत परेशान हो जाया करते थे। लगातार खेलने से उन्हें अपनी क्षमताएं समझ में आने लगीं। धीरे-धीरे अपने कौशल पर जो शक था, वह लुप्त होने लगा और उन्हें अपने ऊपर अधिक विश्वास हो गया। ट्रोल्स ने उन्हें प्रभावित करना पूर्णतः बंद कर दिया।

जडेजा अपने घोड़ों से बहुत भावनात्मक रूप से भी जुड़े हुए हैं। उनके साथ समय व्यतीत करना पसंद करते हैं और महसूस करते हैं कि उनकी बॉडिंग बेहतर हुई है। वह जहां भी हों, अपने फार्म को चेक करते रहते हैं कि सब कुछ ठीक ठाक है, घोड़ों की देखभाल सही हो रही है आदि। जडेजा के कॅरियर में 2014 का लॉर्ड्स (इंग्लैंड) टेस्ट काफी महत्वपूर्ण रहा है। लॉर्ड्स में जीत के मूल्य को हर कोई समझता है। जडेजा ने जब अपना अर्द्ध-शतक पूरा किया तो उसका जश्न मनाने के लिए उन्होंने अपने बल्ले को तलवार की तरह घुमाया। ऐसा उन्होंने पहली बार किया था। इसकी कोई पूर्व योजना नहीं थी, सब कुछ बहुत स्वाभाविक रूप से हुआ। चूंकि वह तलवार खेल में अच्छे हैं, इसलिए जश्न का यह तरीका उनका अपना बन गया है। जडेजा को 90 के दशक का संगीत पसंद है, विशेषकर कुमार सानू के गीत जिनका गहरा अर्थ होता है। उन्हें अच्छी कहानी वाली बॉलीवुड फिल्में पसंद हैं। आजकल बायोपिक का ट्रेंड है, समय मिलने पर वह उन्हें भी देखना पसंद करते हैं। जडेजा को जब कोई जड्डू या जडेजा कहकर पुकारता है तो उन्हें अच्छा लगता है,लेकिन सर पुकारे जाने से उन्हें व्यक्तिगत तौरपर नफरत है।

प्रकृति का रोमांच-मणिकर्ण



-विनोद बब्बर

मणिकर्ण इतना खूबसूरत कि कोई भी उपमा इसके लिए कम ही होगी। ऐसे पर्यटक जिन्हें चर्म रोग या गठिया जैसे रोग परेशान करते हो,वे यहाँ आकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते हैं। ऐसा माना जाता है कि यहाँ के गंधकयुक्त गर्म पानी में कुछ दिन स्नान करने से अनेक प्रकार की व्याधियों से छुटकारा मिलता है।

मणिकर्ण मंडी- कुल्लू मार्ग पर कुल्लू से 10 कि.मी. पहले बसे एक खूबसूरत कस्बे भंतुर से 35 किलोमीटर है। इसी भुंतर में ही व्यास व पार्वती नदियों का संगम है। सर्पीले रास्ते में तिब्बती बस्तियाँ हैं।

समुद्र तल से छह हजार फुट ऊंचाई पर बसे मणिकर्ण का शब्दिक अर्थ 'कान का बाला' है। यहाँ मंदिर व गुरुद्वारे की विशाल इमारत से लगती हुई पार्वती नदी बहती है जिसका वेग रोमांचित करता है। नदी का पानी बर्फ की तरह ठंडा है। नदी की दाहिनी तरफ गर्म जल के उबलते स्रोत नदी से उलझते दिखते हैं। इस ठंडे-उबलते प्राकृतिक संतुलन से आम आदमी तो क्या वैज्ञानिकों तक भी चकित हो जाते हैं।

मणिकर्ण में बर्फ खूब पड़ती है मगर ठंड के मौसम में भी गुरुद्वारा परिसर के अंदर बनाए विशाल स्नानागार में गर्म पानी उपलब्ध रहता है,पुरूषों व महिलाओं के लिए अलग -अलग प्रबंध है।

दिलचस्प है कि मणिकर्ण के तंग बाजार में भी गर्म पानी की सप्लाई की जाती है जिसके लिए बाकायदा पाइप बिछाए गए हैं। इन्हीं गर्म चश्मों में गुरुद्वारे के लंगर के लिए बड़े-बड़े गोल बर्तनों में चाय ही नहीं बनती बल्कि लंगर की दाल व चावल आदि भी पकते हैं। पर्यटकों के लिए सफेद कपड़े की पोटलियों में चावल डालकर धागे से बांधकर बेचे जाते हैं। विशेष कर नवदंपति ऐसी पोटलियों को इकट्ठे धागा पकड़कर चावल उबालते देखे जा सकते हैं।

गुरुद्वारे की विशाल किलेनुमा इमारत में ठहरने के लिए पर्याप्त स्थान है लेकिन पास ही छोटे-बड़े होटल व कई निजी गेस्ट हाउस भी हैं। वैसे ठहरने के लिए तीन किलोमीटर पहले कसोल भी एक विकल्प है।

संसार की अद्भुत और शायद अपने ढंग की अनूठी संस्कृति व लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था रखने वाले गांव मलाणा का मार्ग भी मणिकर्ण से लगभग 15 किमी. पीछे जरी नामक स्थल से होकर जाता है। मलाणा के लिए नग्गर से होकर भी लगभग 15 किमी. पैदल रास्ता है।

सोशल मीडिया ट्रेंड



सारा अली ने की पूजा

बॉलीवुड एक्ट्रेस सारा अली खान अपने फैंस को लेकर काफी सरलता व सहजता दिखाते नजर आती हैं। इंस्टाग्राम पर भी वे काफी एक्टिव रहती हैं और यही कारण है कि उनकी सारी अपडेट्स हमें टाइम टू टाइम मिलती रहती हैं। इन दिनों सारा अपनी आगामी फिल्म की शूटिंग के लिए बनारस में है। जब सारा अली खान बनारस के दशाश्वमेध घाट पर होने वाली विश्व प्रसिद्ध गंगा आरती में शरीक हुई हैं। गुलाबी रंग के सूट में माथे पर तिलक लगाए और हाथ जोड़कर आम लोगों की भीड़ के बीच बैठी सारा अली भक्ति में एकदम लीन नजर आई।



सोच रहा हूं सोशल मीडिया छोड़ दूं

प्रधानमंत्री मोदी ने ट्वीट किया- सोच रहा हूं कि फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और यूट्यूब पर अपने सोशल मीडिया एकाउंट्स छोड़ दूं। उन्होंने अपने इस इरादे की कोई वजह नहीं बताई है और न ही ये कहा है कि वो अपने सोशल मीडिया एकाउंट्स डिलीट करेंगे या डिएक्टिवेट (निष्क्रिय) या उनसे यूं ही दूरी बना लेंगे। उनके ट्वीट के बाद सोशल मीडिया पर प्रतिक्रियाएं आनी शुरू हो गई हैं। पीएम मोदी सोशल मीडिया में काफी सक्रिय भी हैं और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के बाद ट्विटर पर सबसे ज्यादा फॉलो किए जाने वाले नेता हैं।



ट्रेंड में आयुष-सई का मांझा सॉन्ग

आयुष शर्मा और सई मांजरेकर का सिंगल मांझा सॉन्ग ट्रेंड मेंचल रहा है। जिसके बाद से दर्शकों में इस वीडियो को लेकर उत्सुकता बनी हुई थी। इस समय के सबसे रोमांटिक गाने के तौर पर पहचाने जाने वाले गाने मांझा को अरविंद खैरा ने देसी म्यूजिक फैक्ट्री के लेबल के तहत निर्देशित किया है और अंशुल गर्ग ने इसे प्रस्तुत किया है। इस गाने में आयुष और सई को एक दूसरे के साथ पतंगबाजी का आनंद लेते हुए दिखाया गया है। 24 घंटे के अंदर इस गाने यूट्यूब पर 21 लाख से ज्यादा बार देखा जा चुका है।

मोटिवेशनल मंत्र

आस्तिकता साध्य नहीं, साधन

-सीताराम गुप्ता

विचार कीजिए कि यदि हम ईश्वर पर तो विश्वास करते हैं लेकिन स्वयं अपने पर नहीं तो क्या ऐसी अवस्था में भी जीवन में सफलता प्राप्त कर सकेंगे? यदि हम कहें कि मैं तो इस कार्य को हर्गिज नहीं कर सकता, ईश्वर ही कर सकता है तो क्या ऐसी अवस्था में भी कार्य सम्पन्न हो जाएगा? शायद नहीं। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए जरूरी है विश्वास लेकिन अनिवार्यतःस्वयं पर,अपनी क्षमताओं पर। विश्वास व्यक्ति की अपनी मनोदशा है चाहे वह स्वयं पर करे अथवा अन्य पर। दूसरे पर किया गया विश्वास भी करने वाले के मन में ही तो घटित होता है, चाहे वह अन्य व्यक्तियों पर किया गया विश्वास हो अथवा ईश्वर पर किया गया विश्वास।

विवेकानंद ने कहा है कि नास्तिक वो नहीं जो ईश्वर पर विश्वास नहीं करता अपितु नास्तिक वो है जो स्वयं पर विश्वास नहीं करता। यदि आपमें आत्मविश्वास है तो आप वास्तव में आस्तिक हैं बेशक आप पूजा-अर्चना जैसे बाह्य तत्वों से विमुख रहते हों। अब प्रश्न उठता है कि क्या हम आत्मविश्वास के सम्मुख ईश्वर पर विश्वास करना छोड़ दें? नहीं, ऐसा भी नहीं है। वस्तुतः आस्तिकता और आत्मविश्वास दोनों एक ही हैं। आस्तिकता आत्मविश्वास उत्पन्न करने का साधन अथवा मार्ग है। ईश्वर में विश्वास अथवा आस्तिकता द्वारा हम स्वयं में आत्मविश्वास उत्पन्न कर अपनी आत्मशक्ति का ही जागरण करते हैं। आस्तिकता में जहाँ तक ईश्वर में विश्वास का प्रश्न है हमारा ईश्वर नितांत हमारी आकांक्षाओं के अनुरूप होता है।

मनुष्य की क्षमता भी अपरिमित है और उसके विकास के लिए, उसको जानने, खोजने और समुचित उपयोग करने के लिए आत्मविश्वास रूपी माध्यम अत्यंत आवश्यक है। जीवन में आगे बढ़ने के लिए सफलता प्राप्त करने के लिए तथा खेलों में विजय प्राप्त करने के लिए शारीरिक बल की अपेक्षा अधिक जरूरी है आत्मविश्वास। आत्मविश्वास से ही सभी साधन जुट पाते हैं। आत्मविश्वास हो तो शारीरिक बल की कमी ही नहीं अपितु विकलांगता भी सफलता में बाधा नहीं बनती।हमारे विकास में सबसे बड़ी बाधा है आत्मविश्वास का अभाव न कि शारीरिक बल की कमी और विकलांगता या आर्थिक अभाव। मन-मस्तिष्क को कभी विकलांग मत होने दीजिए। आपका उत्कट आत्मविश्वास असंभव को संभव बना देगा।

वृश्चिक
SCORPIO

राशि विशेष : शुभ अंक 9,रंग आसमानी

साझेदारी में गतिरोध बढ़ने से आप काम बीच में छोड़ सकते हैं । इस सप्ताह लेनदेन के मामलों में आरोप लग सकते हैं। आपको सहयोगी नीचा दिखाने की कोशिश कर सकते हैं। इस सप्ताह आप धन कमाने के दूसरे विकल्पों की तलाश में रहेंगे।

धनु
SAGITTARIUS

राशि विशेष : शुभ अंक 5,रंग सफेद

उच्च अध्ययन में बेहतर सफलता के आसार हैं। इस सप्ताह अपनों के व्यवहार में बदलाव होगा।कार्य क्षेत्र में समस्या सुलझने से आपको खुशी होगी।इस सप्ताह लोगों का साथ आपको अच्छी सफलता लाएगा।स्वास्थ्य सही रहेगा।

मकर
CAPRICORN

राशि विशेष : शुभ अंक 2,रंग जामुनी

आपकी उदार भावनाओं को देख कर अधिकारी आश्चर्य करेंगे ।इस सप्ताह लेनदेन के मामलों में सतर्क रहें। सहयोगी धोखा दे सकते हैं । परिजनों से मुलाकात सुखद रहेगी । उलझे मामले सुलझने के योग बन रहे हैं।

कुंभ
AQUARIUS

राशि विशेष : शुभ अंक 8,रंग लाल

तालमेल से इस सप्ताह से काम बन सकेंगे।नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। मेहमानों की आवाजाही से पकी यात्रा कार्यक्रम में बदलाव हो सकते हैं।प्रभावशाली लोगों से मुलाकात सही रहेगी।इन सप्ताह स्वास्थ्य में पहले से सुधार रहेगा।

मीन
PISCES

राशि विशेष : शुभ अंक 9,रंग पीला

इस सप्ताह पूंजी निवेश सोच-समझकर करें।अपनों के व्यवहार से आपको चिंता हो सकती हैं । ले देकर काम करवाना आपको सही रहेगा।इस सप्ताह लाभ देने वाली छोटी योजनाओं की शुरुआत हो सकती है।अध्ययन में मन के अनुसार परिणाम नहीं मिलेंगे ।अधिकारियों से तालमेल के अभाव में मुश्किलें बढ़ सकती हैं।

गांधी मार्ग से

नेता से सेवा का पर्याय बना बलदेव

दो-तीन दिनों बाद 10 व्हीलचेयर उसने दान में दिलवा भी दी। बलदेव के इस काम से मुझे उसमें छिपी हुई संवेदनशीलता दिखाई दी। जब सेवा की शुरूआत लावारिस रोगियों के लिए हुई, तब मैं संवेदनशील लोगों की तलाश कर रहा था। तभी बलदेव याद आए।



डॉ. वीरेन्द्र सिंह

अन्य स्टाकवर्मियों की रिपोर्ट के आधार पर मेरे दिमाग में नर्सिंग कर्मचारी नेता श्री बलदेव की छवि अच्छी नहीं थी। अधीक्षक बनने के बाद एक बार मैं जब कुछ लोगों से ट्रॉली और व्हीलचेयर दान की बात कर रहा था, तब वहां खड़े बलदेव ने कहा कि वह भी कुछ व्हीलचेयर दान करवाएगा। दो-तीन दिनों बाद 10 व्हीलचेयर उसने दान में दिलवा भी दी। बलदेव के इस काम से मुझे उसमें छिपी हुई संवेदनशीलता दिखाई दी। जब सेवा की शुरूआत लावारिस रोगियों के लिए हुई, तब मैं संवेदनशील लोगों की तलाश कर रहा था। तभी बलदेव याद आए। मैंने सोचा, क्यों न एक प्रयोग किया जाए। डॉ.नरेन्द्र की मदद हेतु बलदेव को सेवा का नोडल अधिकारी बनाया गया। शुरूआत में वह रूचि नहीं ले रहा था, लेकिन एक-दो बार समझाने के बाद सक्रिय हो गया। शुरू के कुछ लावारिस रोगी जब ठीक होकर अस्पताल से गए तो उसका उत्साह देखते ही बनता था। लावारिस रोगियों पर हुए खर्च के पैसे मैं डॉ.नरेन्द्र और श्री बलदेव को दे देता था। लेकिन मुझसे पैसा लेने में वे हमेशा आनाकानी करते थे। फिर जब काफी समय उन्होंने पैसे नहीं मांगे तो मैंने कारण पूछा। उन्होंने बताया, सर हमने 50 लोगों का एक समूह बना लिया है, जो हर महीने 200 रूपए देते हैं। इस प्रकार प्रतिमाह 10000 रूपए इकट्ठे हो जाते हैं और इन रोगियों का काम चल जाता है। मैं बलदेव का एक नया रूप देख रहा था। यह मन लगाकर काम कर रहा था एवं इस काम में आने वाली हर रूकावट को अपने स्तर पर ही दूर कर लेता था। मेरी खुशी का कोई ठिकाना व पारावार न रहा जब मेरे सेवानिवृत्त होने के बाद एक दिन श्री बलदेव घर आए और मुझे बताया कि इस सेवा के लिए उन्हें नर्सिंग में देश का सर्वोच्च पुरस्कार नाइटिंगेल अवॉर्ड राष्ट्रपति द्वारा मिला है।

इस प्रयोग के प्रभाव

खोया हुआ मिशनरी तत्व सही मार्गदर्शन से जाग गया और बलदेव लावारिस रोगियों के लिए धरती का भगवान बन गया। हर ईसान में जरूरत इस बात की होती है कि सही समय पर उसकी ईसानियत को क्रियाशील बना दिया जाए, जिससे शैतान निष्क्रिय हो जाए।

टोक्यो ओलंपिक पर लटकती कोरोना के कहर की तलवार

24 जुलाई 2020 से दुनिया का सबसे बड़ा खेल कुंभ टोक्यो ओलंपिक शुरू होने हैं, जो 17 दिनों तक यानी 9 अगस्त 2020 तक चलेगा। भले इस समय इसके आयोजन पर सवालिया निशान लगे हों लेकिन इसका पूरा शिडयूल जारी किया जा चुका है। टोक्यो ओलंपिक की आधिकारिक वेबसाइट के मुताबिक इस बार खेलों के इस महाकुंभ की शुरूआत के पहले ही महिला फुटबॉल के प्रीलिमिनरी राउंड खेले जाएंगे।



साशा

आज पूरी दुनिया के खेल प्रेमी एक ही सवाल पूछ रहे हैं, क्या टोक्यो ओलंपिक सम्पन्न हो सकेगा? दरअसल जिस तरह से कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया में डर और दहशत का माहौल पैदा कर दिया है, जिस तरह से दुनिया के तमाम देश अपने आपको लैंडलॉक करने पर तुले हैं, जिस तरह से करीब दो दर्जन देशों ने अपने यहां तमाम देशों के टूरिस्टों के आगमन पर रोक लगा दी है और बहुत से देशों ने तो किसी भी देश का टूरिस्ट वीजा रद्द कर दिया है। इन सब बातों को देखते हुए अगर टोक्यो ओलंपिक के सम्पन्न होने पर दिल दिमाग में कोई सवाल उठता है तो यह बहुत स्वभाविक है। भले इस आयोजन की उल्टी गिनतियां शुरू हो गई हो, लेकिन इन दिनों दुनिया का कोई भी खेल संगठन 100 फीसदी विश्वास नहीं है कि ओलंपिक आयोजन सम्पन्न होगा।

24 जुलाई 2020 से दुनिया का सबसे बड़ा खेल कुंभ टोक्यो ओलंपिक शुरू होने हैं, जो 17 दिनों तक यानी 9 अगस्त 2020 तक चलेगा। भले इस समय इसके आयोजन पर सवालिया निशान लगे हों लेकिन इसका पूरा शिडयूल जारी किया जा चुका है। टोक्यो ओलंपिक की आधिकारिक वेबसाइट के मुताबिक इस बार खेलों के इस महाकुंभ की शुरूआत के पहले ही महिला फुटबॉल के प्रीलिमिनरी राउंड खेले जाएंगे।

अभी तक पूरी दुनिया के एथलीट टोक्यो ओलंपिक के तयशुदा कार्यक्रम को ध्यान में रखकर ही अपनी तैयारियों में जुटे हैं। वैसे अभी तक अंतिम रूप से यह तय नहीं हुआ कि कितने भारतीय एथलीट टोक्यो ओलंपिक में शिरकत करने जा रहे हैं। लेकिन अगर पहले से तय शिडयूल को देखें तो सात खेल प्रतिस्पर्धाओं में 42 पुरुष और 32 महिला खिलाड़ियों का जाना तय है। इस तरह करीब 35 एथेटस में 74 भारतीय खिलाड़ियों का शामिल होना अभी तक तय माना जा रहा है।

इन खिलाड़ियों के साथ करीब दो दर्जन सहायक स्टाफ से लेकर दूसरे अधिकारी भी शामिल होंगे। भारतीय एथलीट जिन खेलों में अपनी किस्मत आजमाएंगे, अभी तक के मुताबिक उनमें तीरअंदाजी, एथलेटिक्स, बॉक्सिंग, फील्ड हॉकी, शूटिंग, कुश्ती और घुड़सवारी शामिल हैं।

हालांकि भारतीय एथलीटों से कई बार हम काफी ज्यादा उम्मीदें लगा लेते हैं, इतनी ज्यादा कि खेल खत्म होने के बाद हमारी उम्मीदें अटपटी लगने लगती हैं। लेकिन कई विशेषज्ञों की राय है कि शायद टोक्यो ओलंपिक वह आयोजन होगा, जहां से हिंदुस्तान की ओलंपिक कहानी बदलेगी। माना जा रहा है कि इस बार भारतीय खिलाड़ी कम से कम 10 पदक लेकर आएंगे, जैसा आज तक कभी संभव नहीं हुआ। लेकिन फिलहाल ओलंपिक खेलों को लेकर सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या ये सम्पन्न होंगे? सम्पन्न होंगे तो क्या समय पर सम्पन्न होंगे?

ये तमाम सवाल इसलिए पैदा हो गये हैं, क्योंकि दुनिया के कई दूसरे देशों में भी इन दिनों कोरोना वायरस के संक्रमण को देखते हुए कई खेल प्रतियोगिताएं दर्शकों की गैरमौजूदगी में सम्पन्न हुई हैं या ऐसे किये जाने की योजना बनायी गई है। अगर दर्शकों के स्वास्थ्य संबंधी समस्या के बावजूद भी खेल आयोजन सम्पन्न होने का दबाव है तो इसके पीछे बड़ा खेल पैसे का ही हो सकता है। मगर सवाल है क्या टोक्यो ओलंपिक कोरोना वायरस से लड़ पायेगा? लड़ेगा तो क्या जीत पायेगा? अभी ये तमाम सवाल किंतु परंतु की मझधार में फंसे हैं। भले टोक्यो ओलंपिक समिति के अध्यक्ष योशिरो मोरी कह रहे हैं कि किसी भी कीमत में टोक्यो ओलंपिक रद्द नहीं होगा, लेकिन दुनिया में कोरोना वायरस का जो बढ़ावास कर देने वाला डर फैला हुआ है, उसके बीच दुनिया का इतना बड़ा आयोजन भी कम से कम अभी तो संभव नहीं लगता और अगर किसी तरह से खींच खांचकर ये हुए भी तो महज खानापूर्ति या आर्थिक नुकसान की भरपायी की कोशिश जैसे ही होंगे।

अगर योशिरो मोरी के इतर जापान से ही आने वाले कुछ अन्य संकेतों की तरफ ध्यान दें तो जापान सरकार इन खेलों को अगस्त की बजाय दिसंबर में कराने की सोच रही है।

यह संकेत जापान सरकार में शामिल ओलंपिक मंत्री ने जापान की संसद में एक सवाल के जवाब में संभावना जताते हुए दी है। ऐसे में अगर ओलंपिक जैसे महान खेल कुछ महीनों के समय के एडजेस्टमेंट से बचते हैं तो बचाने की कोशिश की जानी चाहिए।

नई शुरुआत

एपल डब्ल्यूडब्ल्यूडीसी इवेंट होगा ऑनलाइन



टेक दिग्गज ऐपल ने को ये घोषणा की है कि कंपनी की एनुअल वर्ल्डवाइड डेवलपर्स कॉन्फ्रेंस (डब्ल्यूडब्ल्यूडीसी) को जून में आयोजित किया जाएगा। साथ ही कंपनी ने ये भी जानकारी दी है कि दुनियाभर में तेजी से फैल रहे कोरोना वायरस के चलते इवेंट का आयोजन केवल डिजिटल फॉर्मेट में किया जाएगा। देरी टेक कंपनियों ने कोरोना वायरस के मद्देनजर अपने ऑन-ग्राउंड इवेंट्स/कॉन्फ्रेंस को या तो कैंसिल कर दिया है या स्थगित कर दिया है।

31 साल में ये पहली बार होगा, जब (डब्ल्यूडब्ल्यूडीसी) इवेंट का आयोजन नए ऑनलाइन फॉर्मेट में होगा। इस इवेंट में कंप्यूमर्स, प्रेस और डेवलपर्स के लिए कंटेंट होगा। ऑनलाइन इवेंट में लाखों डेवलपर्स के लिए एलिमेंट्स को जल्दी ऐक्सेस करने का मौका होगा। इसमें अपकमिंग आईओएस, आईपैडओएस, मैकओएस, वॉचओएस और टीवीओएस शामिल हैं। कंपनी ने एक स्टेटमेंट में कहा कि इवेंट के जरिए हेरो डेवलपर्स को ऐपल के वेहतरीन ऐप्स बनाने वाले इंजीनियर्स के साथ भी जुड़ने का मौका मिलेगा।

ऐपल में वर्ल्डवाइड मार्केटिंग के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट ने कहा- हम इस बार जून में (डब्ल्यूडब्ल्यूडीसी)2020 को वेहद इनोवेटिव तरीके से दुनियाभर के लाखों डेवलपर्स को डिलिवर करेंगे। उन्होंने आगे कहा कि वर्तमान स्वास्थ्य स्थिति ऐसी बन रही है कि हमें (डब्ल्यूडब्ल्यूडीसी) 2020 के लिए एक नए फॉर्मेट को लाने की जरूरत पड़ रही है। इस फॉर्मेट में ऑनलाइन की-नोट और सेशन्स के साथ पूरे प्रोग्राम को डिलिवर किया जाएगा।

ऐपल ने ये भी घोषणा की है कि कंपनी ग्रेटर चाइना में मौजूद रिटेल स्टोर्स के अलावा दुनियाभर में मौजूद अपने सारे रिटेल स्टोर्स को अगले दो हफ्तों के लिए बंद रखेगी, ताकि कोरोना वायरस के खतरे को कम करने में मदद मिल सके।





रंग भरो



बच्चों इस बार आपको इस चित्र में अपनी पसंद के रंग भरने हैं।

बाल कविता

तोता और केरी



तोता केरी खाता है
कुतर-कुतर रह जाता है
टे टे करता सदा-सदा
बच्चों को वह भाता है।
नहीं अकेला आता है
मित्र साथ में लाता है
छुगन पर जब बैठा होता
सागे केरी पाता है।
झूम झूम लहराता है
खाते वह इठलाता है
छोड़ अधूरी केरी को
निकट दूसरी जाता है।
ना वह माने माता है
आम वृक्ष से नाता है
काट कभी केरी ठंठल को
वह दाता बन जाता है।।
- कृष्ण वल्लभ पौराणिक

साभार: देव दुनिया

खास कहानी

सुधर गया चीता





-नरेन्द्र देवांगन

चीता लुटेरा जंगल के जानवरों के लिए आतंक बना हुआ था। जंगल के जानवर उसका नाम सुन कर कांप उठते। जैसे ही उन्हें पता चलता कि चीता आ रहा है, वे जंगल छोड़ कर अपनी जान बचाने के लिए इधर उधर भाग जाते।

एक अंधेरी रात में चीता और उस के साथी लुटेरे जब एक के बाद एक जंगल को लूटे जा रहे थे तो उन्हें खाली जंगल ही मिलते थे। उन की चर्बियां उन मशालों की रोशनी से चमक रही थी जिन से वे घरों में आग लगाते थे।

'तुम सब रूको', अचानक चीते ने अपने साथियों से कहा, 'क्या तुम्हें वह रोशनी दिखाई दे रही है, जो उस जंगल के एक घर में जल रही है?'

'हां',दल के एक सदस्य ने कहा।

'पर जब चीता लूटपाट कर निकला हो तो यह रोशनी कैसी?' चीते ने कहा।

'सरदार, लगता है इस जंगल का कोई जानवर होशियार बनने की कोशिश कर रहा है', दल के दूसरे सदस्य ने कहा।

'जब मैं किसी जंगल में घुसता हूं तो हमेशा अंधेरा मिलता है। उस रोशनी से पता चलता है कि कोई ऐसा भी है जो मुझ से नहीं डरता,चीता गुर्राया।

जब चीता घर के पास पहुंचा तो यह देख कर हैरान रह गया कि एक बूढ़े खरगोश के पास जमीन पर केवल एक छोटा सा खरगोश बैठा है।

बूढ़ा खरगोश उस छोटे से खरगोश से कह रहा था,'बेटा चींकू,सभी जानवर जंगल छोड़ कर चले गए हैं। चीते के यहां आने से पहले तुम भी भाग जाओ। वह तुम्हें यहां देख कर मौत की नींद सुला देगा।' चींकू खरगोश ने कहा,'पिताजी, आपने मुझे पाला पोसा,मेरी देखभाल की और मेरे लिए इतनी तकलीफ उठाई। मैं आप को बुझारे में इस बीमारी की हालत में छोड़ कर कैसे जा सकता हूं? एक मामूली से खरगोश के खातिर को देख कर चीता हैरान हो उठा। उस समय उसे बहुत खुशी होती जब जानवर उससे जान की भीख मांगते लेकिन इस खरगोश को उस का जरा भी भय नहीं।

'इस में इतना साहस और शक्ति कहां से आई? अवश्य ही इसे पिता के प्रति प्यार होगा', चीते ने सोचा। चीते को अपने पिता का ख्याल आया, बीमारी के कारण जिनकी मृत्यु हो गई थी। उस की कूर आंखों में आंसू भर आए। उसे लगा कि वह फिर बच्चा बन गया है।